लंदन
जून १७, १९९९

सन्देश संख्या ९

अनुभव उस अनिर्वचनीय रहस्य के प्रत्यक्षबोध की मृत्यु है

अनुभव उस अनिर्वचनीय रहस्य के प्रत्यक्ष बोध की मृत्यु है जिसे हम 'प्रेम', 'सत्', 'अस्तित्व', 'शाश्वत', 'दिव्य', 'आनन्द', 'पवित्रता', 'अनाममय' इत्यादि नाम से जानते हैं।

शायद उस रहस्य तक आप भी पहुँच सकते हैं यदि आप समझदारी से उसका अभ्यास करें, जो आपको उस मानव शरीर, जिसे लाहिड़ी महाशय कहा जाता है, के माध्यम से बताया जा चुका है और जिसे आज भी उनकी रक्त कोशिकाओं एवम् अस्थि–मज्जा द्वारा विश्व भर में प्रत्येक वर्ष बताया जा रहा है।

आप उस रहस्य का स्वयम् अपने लिए एवम् अपने द्वारा आविष्कार करें। कोई दूसरा व्यक्ति यह रहस्य आपके लिए उद्घाटित नहीं कर सकता है और कुछ भी इसे विनष्ट नहीं कर सकता है।